

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 8, धर्म और अमेरिकी क्रांति

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

हम शुरू करने जा रहे हैं। शुरू करने से पहले मैं बस कुछ बातें कहना चाहता हूँ, और फिर हम यहाँ अपनी रूपरेखा पर आएँगे। हम संस्थापक पिताओं और उनकी धार्मिक समझ के बारे में बात कर रहे हैं।

मैंने दूसरे दिन यह तर्क देने की कोशिश की कि वे देववादी थे, मुझे लगता है, उनमें से ज़्यादातर, वैसे भी प्रेरक और आकार देने वाले और हिलाने वाले। वे देववादी थे। वे वे नहीं थे जिन्हें हम इंजील ईसाई कह सकते हैं, लेकिन आपको उस पर जोर देने की ज़रूरत है।

आप इसे उस तरह से नहीं देखते हैं। यदि आप संस्थापक पिताओं को किसी अलग तरीके से समझते हैं, तो आपको इसके बारे में बात करने की ज़रूरत है। यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है, और हमें इस पर चर्चा करनी चाहिए।

मैं आपके साथ हूँ, एरन। दूसरे दिन की एक बात जो शायद हमने पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं की, वह यह है कि इसमें कोई संदेह नहीं है। हालाँकि, आप संस्थापक पिताओं को देखें और आप दस्तावेजों को देखें और दस्तावेजों में क्या कहा गया है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस सब के लिए एक नैतिक, नैतिक, यहूदी-ईसाई ढांचा था। अब, उन्होंने उस भाषा का उपयोग नहीं किया जो प्यूरिटन ने इस्तेमाल की होती अगर वे किसी देश की स्थापना कर रहे होते, या उन्होंने उस भाषा का उपयोग नहीं किया जो तीर्थयात्री या रोजर विलियम्स ने इस्तेमाल की होती अगर वे किसी देश की स्थापना कर रहे होते, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस सब के लिए एक नैतिक, नैतिक, यहूदी-ईसाई ढांचा और एक तरह की नींव है।

इस बारे में कोई सवाल नहीं है। अब, अमेरिकी जीवन और संस्कृति में नैतिक, नैतिक ढांचे को नष्ट करने के प्रयास किए गए हैं। इस बारे में कोई संदेह नहीं है।

शिकागो विश्वविद्यालय के एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्री और चर्च इतिहासकार, मार्टिन मार्टी ने एक तरह से चुनौती दी थी। यह कुछ साल पहले की बात है, लेकिन वह लोगों की बातों को चुनौती दे रहे थे: ओह, हमारे पास वास्तव में कोई यहूदी-ईसाई ढांचा, आधार, इत्यादि नहीं है, और उन्होंने जो कहा, वह यह है कि आपको अमेरिकी लोगों को उस तरह के यहूदी-ईसाई ढांचे से छुटकारा पाने के लिए लोबोटोमाइज़ करना होगा जिसमें हम अपने आम जीवन में एक साथ रह रहे हैं। आपको लोबोटोमाइज़ करना होगा, और आपको उन्हें यह समझाने के लिए उनका आधा दिमाग या पूरा दिमाग काटना होगा कि एक तरह से कोई यहूदी-ईसाई तरह का आधार या जीवन नहीं है। बस यही है।

यह हमारी संस्कृति का हिस्सा है। यह हमारे नागरिक धर्म का हिस्सा है। इसमें कोई संदेह नहीं है, और शायद हमने इस पर ज़ोर नहीं दिया, या शायद मैंने उस दिन इस पर बिल्कुल भी ज़ोर नहीं दिया, लेकिन हमने यहीं से बात छोड़ी थी।

हम इस चर्चा के बीच में हैं, लेकिन एरन, आपका एक सवाल था। हाँ। ठीक है, ठीक है।

इनमें से बहुत से ईसाई इस बारे में बात करते हैं कि हमें एक की ओर कैसे लौटना चाहिए, इसलिए मैं बस इस बारे में आपकी राय जानना चाहता था कि क्या यह सच है या वे क्या कह रहे हैं। क्या वे किसी तरह का संदर्भ दे रहे हैं, या नहीं? मुझे लगता है कि वे सही हैं। मेरा मतलब है, मुझे लगता है कि हमारे पास एक यहूदी-ईसाई आधार है, और मुझे यकीन नहीं है कि हमें उस पर वापस लौटने की ज़रूरत है, लेकिन हमें इस बारे में और अधिक चर्चा करने की ज़रूरत है, और यह मार्टिन मार्टिने ने कहा, अगर आप इसे बाहर फेंकने की कोशिश करने जा रहे हैं, अगर आप यह दिखावा करने की कोशिश करने जा रहे हैं कि आप अमेरिका में किसी तरह का सामान्य अच्छाई का निर्माण कर सकते हैं, बिना वास्तव में गंभीरता से विचार किए और फिर भी प्रभावी हो सकते हैं, तो आपको अमेरिकी लोगों को लूटना होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। हालाँकि, अगर वे क्रांतिकारी युद्ध और उससे जो कुछ हुआ, देश की स्थापना और हर चीज के संदर्भ में, अगर वे इसे एक बहुत ही इंजील धार्मिक समय और घटना के रूप में देख रहे हैं, तो मुझे उन्हें इस पर चुनौती देनी होगी।

दरअसल, हम क्रांति के समय चर्च में लोगों की उपस्थिति के बारे में बात करेंगे; कुछ जगहों पर, इसमें काफी गिरावट आई क्योंकि लोग राजनीतिक जीवन और धार्मिक जीवन की तुलना में राजनीतिक घटनाओं में अधिक रुचि रखते थे। इसलिए, अगर वे किसी तरह के स्वर्णिम युग को देख रहे हैं, और हमारे पास वह हुआ करता था, तो अब हमारे पास वह नहीं है, मुझे लगता है कि यह एक चुनौती और चर्चा के लायक है। तो, आप जानते हैं, हम बातचीत के बीच में हैं, इसलिए आपका दिल धन्य है।

ठीक है, हम यहाँ आगे बढ़ेंगे। मैं पाठ्यक्रम के पृष्ठ 13 पर हूँ, अगर यह मदद करता है, और हम पाँचवें व्याख्यान पर पहुँच गए हैं, अमेरिकी क्रांति में धर्म। हमने ईश्वरवाद के बारे में बात की; हमने संस्थापक पिताओं के बारे में बात की, और अब हमें चर्चों की प्रतिक्रिया, सी के बारे में बात करने की ज़रूरत है।

तो, चर्चों की प्रतिक्रिया, और मैं इसका परिचय देने जा रहा हूँ, और फिर हम विभिन्न चर्चों को देखेंगे जो क्रांतिकारी युद्ध के समय वास्तव में महत्वपूर्ण थे और उन्होंने उस समय खुद को कैसे स्थापित किया। मैं सबसे महत्वपूर्ण लोगों को देखूँगा। ठीक है, अब, एक शब्द जिसका मैं इस संदर्भ में उपयोग करने जा रहा हूँ, इस नंबर एक परिचय के संदर्भ में, वह शब्द है धार्मिक स्वतंत्रता।

धार्मिक स्वतंत्रता अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में ईसाई धर्म की पहचान बन जाती है, लेकिन धार्मिक स्वतंत्रता इसकी पहचान बन जाती है। अब, हमने धार्मिक स्वतंत्रता कैसे हासिल की? हम

कैसे, यह अमेरिकी ईसाई धर्म की पहचान के रूप में कैसे सामने आया? खैर, मैं इसके बारे में कुछ बातें बताना चाहूँगा। तो, और यह सब यहाँ नंबर एक परिचय के रूप में है।

ठीक है, धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करने में मदद करने वाली पहली चीज़ वह थी जिसके बारे में हम पहले भी कई बार कह चुके हैं, लेकिन क्रांति के समय तक यहाँ बहुत सारे धार्मिक समूह थे। धार्मिक चर्चों की बहुलता और धार्मिक संप्रदायों की बहुलता है। इसका मतलब यह था कि धार्मिक संप्रदायों की बहुलता वास्तव में किसी भी एक संप्रदाय को राज्य संप्रदाय बनने से रोकती थी।

तो, इन सभी अलग-अलग संप्रदायों के चारों ओर पनपने और उनमें से कई के फलने-फूलने के साथ, यह एक प्रमुख संप्रदाय बनने पर रोक है। तो ऐसा नहीं होने वाला था, यह अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में नहीं होने वाला था, और ऐसा नहीं हुआ। तो यह पहला है।

तो, दूसरी बात जो हमने बताई है वह है यूरोपीय चर्चों और नई दुनिया के बीच बहुत बड़ी दूरी। तो, यूरोपीय चर्चों को नई दुनिया से अलग करने वाले उस विशाल महासागर का मतलब था कि वे यूरोपीय चर्च इस नई दुनिया में संप्रदायों पर अपनी पकड़ बनाए नहीं रख सकते थे। उनके पास ऐसा करने की क्षमता या शक्ति नहीं थी।

तो यह नंबर दो है, जो धार्मिक स्वतंत्रता को आगे बढ़ने में मदद करता है। तो तीसरी बात महाद्वीप की विशालता है, जिसके बारे में अभी पता चला है कि यह महाद्वीप कितना विशाल है, जिस पर हम रह रहे हैं। तो, और जब आप पश्चिम की ओर बढ़ रहे हैं, दक्षिण की ओर बढ़ रहे हैं, तो उस विशालता का मतलब है कि एक संप्रदाय यह नियंत्रित नहीं करेगा कि आप पश्चिम की ओर बढ़ रहे हैं या दक्षिण की ओर बढ़ रहे हैं।

यह असंभव होगा। ठीक है, एक और बात जिसने इस धार्मिक स्वतंत्रता को अनुमति दी, वह है इस दुनिया में, इस नई दुनिया में आर्थिक समृद्धि की वास्तविक इच्छा। ये लोग सिर्फ एक बिल्कुल नए तरह का राजनीतिक जीवन और संस्कृति स्थापित नहीं कर रहे थे।

वे स्पष्ट रूप से एक नई अर्थव्यवस्था भी स्थापित कर रहे थे। अब, एक नए आर्थिक जीवन और समृद्ध आर्थिक जीवन की इच्छा के साथ, तब कार्यबल में धार्मिक मतभेदों को नजरअंदाज कर दिया गया था। हर कोई कार्यबल में शामिल हो सकता था, और चाहे आप एक धार्मिक व्यक्ति हों या एक ईसाई व्यक्ति या एक यहूदी व्यक्ति या एक गैर-ईसाई या इस संप्रदाय या उस संप्रदाय से संबंधित हों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि एक तरह की आम आर्थिक भलाई है जिसे हम यहाँ नई दुनिया में हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं।

और इसलिए, वे वहाँ धार्मिक मतभेदों को अनदेखा करने में खुश थे। इस धार्मिक स्वतंत्रता के संदर्भ में एक और बात यह है कि इंग्लैंड में अधिक सहिष्णुता है, जो इनमें से कुछ भूमियों को नियंत्रित करता है। इंग्लैंड में अधिक सहिष्णुता थी जो हो रही थी, जो मददगार है क्योंकि अंग्रेजों का अभी भी ऐसा नियंत्रण था।

अब, जाहिर है, आखिरकार, आप में से कुछ लोग ब्रिटिश वंश के हो सकते हैं। मैं भी हूँ, लेकिन हमने आखिरकार उन्हें बाहर निकाल दिया, बेशक। लेकिन उसके कारण, यहाँ एक उदाहरण है।

जब हम बोस्टन कॉमन में प्यूरिटन्स को फाँसी दे रहे थे, तो प्यूरिटन्स द्वारा बोस्टन कॉमन में प्यूरिटन्स को फाँसी देना बंद करने का एक कारण किंग चार्ल्स द्वितीय भी था। किंग चार्ल्स द्वितीय के अधीन, इंग्लैंड में सहिष्णुता अधिनियम की शुरुआत हुई। और मूल रूप से, किंग चार्ल्स द्वितीय ने कहा, हम अपने उपनिवेशों में ऐसा अब और नहीं होने देंगे।

अब, बेशक, यह पूरे अमेरिकी क्रांतिकारी युद्ध से पहले की बात है। लेकिन अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में भी इस तरह की सहनशीलता बढ़ रही है। एक और चीज जिसने इस धार्मिक स्वतंत्रता में मदद की, वह थी सुधार के वामपंथी और प्यूरिटन के वामपंथी समूह।

ठीक है। और इसलिए, वे यहाँ फल-फूल रहे हैं। अब, जब हम रिफॉर्मेशन के बाएं विंग या प्यूरिटन के बाएं विंग के बारे में बात करते हैं, तो हमारा क्या मतलब है, जब हम ऐसा कहते हैं तो हमारा क्या मतलब है? हमारा मतलब रिफॉर्मेशन के ज़्यादा कट्टरपंथी पक्ष या प्यूरिटन जीवन और प्यूरिटन धर्म के ज़्यादा कट्टरपंथी पक्ष से है।

तो, सुधार के वामपंथी लोग शायद लोग ही रहे होंगे; हम पहले ही जर्मन डंकर्स का ज़िक्र कर चुके हैं। डंकर्स याद हैं? वे सुधार के वामपंथी या मेनोनाइट्स के संप्रदाय थे। हमने अभी तक मेनोनाइट्स के बारे में बात नहीं की है, लेकिन वे सुधार के वामपंथी थे।

वे रिफॉर्मेशन के ज़्यादा कट्टरपंथी विंग में थे। प्यूरिटन के ज़्यादा कट्टरपंथी विंग में केकर और बैपटिस्ट जैसे लोग शामिल रहे होंगे। वे कुछ प्यूरिटन धर्मशास्त्र ले रहे हैं, लेकिन वे इसे कट्टरपंथी बना रहे हैं, है न? तो रिफॉर्मेशन का यह वामपंथी विंग और प्यूरिटन जीवन का वामपंथी विंग, अमेरिकी धार्मिक स्वतंत्रता पर भी प्रभाव डाल रहा है क्योंकि ये लोग फलने-फूलने लगे हैं।

अब, केकर्स ने कभी नहीं सोचा था कि वे सफल होंगे। पहली दो महिलाओं को घर भेज दिया गया। फिर, चार पुरुषों और महिलाओं को बोस्टन कॉमन पर फाँसी पर लटका दिया गया।

इसलिए, उन्हें शायद इस बात पर संदेह था कि वे इस नई दुनिया में कभी फलने-फूलने वाले हैं, लेकिन वास्तव में, वे रोड आइलैंड और फिर पेंसिल्वेनिया में फले-फूले, जो बन गया... पेंसिल्वेनिया का उपनाम क्या है? हम पेंसिल्वेनिया को क्या कहते हैं? कोई? पेंसिल्वेनिया? हम इसे केकर राज्य कहते हैं, पेंसिल्वेनिया, केकर राज्य। क्या आपने पहले कभी ऐसा सुना है? केकर राज्य? ठीक है। तो, यह केकर राज्य है।

तो, यह बात है। तो, वैसे भी, यहाँ बहुत कुछ फल-फूल रहा है। तो, ठीक है।

दूसरी बात धार्मिक स्वतंत्रता है; यह धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि राज्य व्यवस्थित हो सकता है। राज्य दयालु हो सकता है। राज्य न्यायपूर्ण होते हुए भी धार्मिक स्वतंत्रता की अनुमति दे सकता है।

इसलिए, राज्य को उस तरह का राज्य बनाने के लिए धार्मिक एकरूपता की आवश्यकता नहीं है जैसा कि ये लोग बनाने की कोशिश कर रहे हैं। आपको इसकी आवश्यकता नहीं है। आपको इसकी आवश्यकता नहीं है।

आप एक व्यवस्थित राज्य बना सकते हैं। आप एक व्यवस्थित समाज बना सकते हैं। आप एक न्यायपूर्ण समाज, एक दयालु समाज बना सकते हैं जिसमें किसी एक धार्मिक समूह का धार्मिक वर्चस्व न हो।

फिर, हमने धार्मिक स्वतंत्रता के व्यवसाय का भी उल्लेख किया है। हमने पहले महान जागरण का भी उल्लेख किया है। पहले महान जागरण ने इस धार्मिक स्वतंत्रता के लिए एक तरह से आधार तैयार करने में मदद की, एक रूपरेखा तैयार की क्योंकि पहले महान जागरण में लोग चर्च और राज्य के पृथक्करण में विश्वास करते थे, चाहे एंग्लिकन दृष्टिकोण से या डच सुधार दृष्टिकोण से या मण्डली दृष्टिकोण से, लेकिन वे चर्च और राज्य के पृथक्करण में विश्वास करते थे।

तो, पहली महान जागृति ने अमेरिकी क्रांति के लिए कुछ वास्तविक आशाएँ रखीं। तो, ठीक है। और फिर, परिचय के तौर पर बस एक और बात है: हम 18वीं सदी में आ रहे हैं।

यह तर्क का युग है, तर्कसंगतता का युग है। निश्चित रूप से, ईश्वरवाद का निर्माण तर्क के उस युग में हुआ है। इसलिए, हम यहाँ बहुत ही तर्कसंगत समय में आ रहे हैं, एक बहुत ही उचित समय, ईसाई धर्म की तर्कसंगतता, उस तरह की चीज़।

और इसलिए ईसाई धर्म की तर्कसंगतता, वे लोग पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता में दृढ़ता से विश्वास करते हैं। वे धार्मिक स्वतंत्रता में विश्वास करते थे। और इसलिए वे धार्मिक स्वतंत्रता के वास्तविक समर्थक हैं, जरूरी नहीं कि वे बाइबल खोलकर ऐसा करें, लेकिन वे एक उचित दृष्टिकोण, एक तर्कसंगत दृष्टिकोण से धार्मिक स्वतंत्रता के समर्थक हैं।

इस तरह सभ्य लोग धार्मिक अनुरूपता के बजाय धार्मिक स्वतंत्रता की अनुमति देकर एक साथ रहते हैं। इसलिए चर्चों की प्रतिक्रिया के संदर्भ में यह पहली बात है, परिचय का यह तरीका, धार्मिक स्वतंत्रता वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है। अब मैं जो करने जा रहा हूँ, वह यह है कि मैं कुछ चर्चों को देखने जा रहा हूँ जो वास्तव में फले-फूले, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं, थोड़ा और क्रांति के समय में एक दिलचस्प जीवन था।

तो, चलिए सबसे पहले एंग्लिकनवाद को चुनते हैं क्योंकि एंग्लिकनवाद स्पष्ट रूप से बहुत महत्वपूर्ण था। और तो, एंग्लिकनवाद के साथ क्या होता है? ठीक है। मैंने एंग्लिकनवाद को चुना क्योंकि एंग्लिकनवाद, हालांकि यह महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण था, और इसने उन लोगों की सोच को आकार देने में मदद की जिनके बारे में हमने बात की है, राजनीतिक और धार्मिक दोनों, एंग्लिकनवाद को अमेरिकी क्रांति के परिणामस्वरूप सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ा।

और आप इस बात से हैरान नहीं हैं। तो ठीक है। मैं आपको यहाँ कुछ आँकड़े देता हूँ।

क्रांतिकारी युद्ध के अंत तक, यह अनुमान लगाया गया है कि लगभग 70,000 एंग्लिकन वापस घर चले गए क्योंकि वे ब्रिटिश थे। वे वफ़ादार ब्रिटिश नागरिक थे। इसलिए, यह अनुमान लगाया गया है कि लगभग 70,000 एंग्लिकन यहाँ से चले गए और वापस घर चले गए।

ऐसा अनुमान है कि क्रांतिकारी युद्ध के अंत में, सभी कॉलोनियों में केवल 10 एंग्लिकन पादरी बचे थे। अब, मैं स्थानीय स्तर पर ऐसे चर्चों को जानता हूँ, जिनमें एक चर्च में 10 से ज़्यादा एंग्लिकन पादरी हैं। तो यह एंग्लिकन चर्च, एंग्लिकन समुदाय, एंग्लिकन चर्च, एंग्लिकन नेतृत्व के लिए वाकई बहुत विनाशकारी था।

यह इतना दर्दनाक था कि इसने वास्तव में संप्रदाय का नाम बदल दिया। संप्रदाय का नाम, निश्चित रूप से, एंग्लिकन या चर्च ऑफ इंग्लैंड था क्योंकि यही यहाँ आया था। उन्होंने एंग्लिकन या चर्च ऑफ इंग्लैंड से नाम बदल दिया।

उन्होंने इसे प्रोटेस्टेंट एपिस्कोपल चर्च में बदल दिया। इसलिए, वे चर्च की राजनीति, पदानुक्रम, एंग्लिकन चर्च के बिशपत्व को दर्शाने के लिए एपिस्कोपल शब्द का उपयोग कर रहे हैं। लेकिन इसे प्रोटेस्टेंट एपिस्कोपल चर्च के रूप में जाना जाने लगा और, ज़ाहिर है, बहुत से लोगों ने इसे एपिस्कोपल चर्च कहना शुरू कर दिया।

तो इससे पता चलता है कि इस एंग्लिकन समुदाय में किस तरह का बदलाव आया था कि उन्हें लगा कि उन्हें वास्तव में नाम बदलना होगा क्योंकि अगर वे एंग्लिकन शब्द को रखते तो यह हानिकारक होता। या अगर वे क्रांतिकारी युद्ध जीतने के बाद चर्च ऑफ इंग्लैंड शब्द रखते और उन्हें बाहर निकाल देते तो यह भी अच्छा नहीं होता। इसलिए, उन्होंने नाम बदल दिया।

क्या अब भी कैंटरबरी के आर्कबिशप के साथ उनके संबंध हैं? अब भी कैंटरबरी के आर्कबिशप के साथ उनके संबंध हैं। यह एक अच्छा सवाल है, क्योंकि हमें एंग्लिकन चर्च की राजनीति में याद रखना चाहिए, कैंटरबरी का आर्कबिशप पोप जैसा नहीं है। पोप वास्तव में, आप जानते हैं, दुनिया भर में रोमन कैथोलिक चर्च पर शासन करते हैं।

हालांकि, कैंटरबरी का आर्कबिशप बराबरी का व्यक्ति है जो एंग्लिकन चर्च पर शासन नहीं करता है, बल्कि विभिन्न एंग्लिकन समुदायों में एंग्लिकन चर्च की मदद करता है, जो आपस में जुड़े हुए हैं। तो हाँ, एंग्लिकन चर्च, एपिस्कोपल चर्च जो बचे थे, उनका अभी भी कैंटरबरी के आर्कबिशप से संबंध है। लेकिन अब बहुत से एंग्लिकन नहीं बचे हैं, और बहुत से पुजारी भी नहीं बचे हैं।

तो, यह समस्यापूर्ण हो जाता है। एपिस्कोपल सिर्फ़ सरकार के तरीके, बिशप का पद, पदानुक्रम से आता है। वे अपने चर्च को कैसे संचालित करते हैं।

चर्च की राजनीति, उन्हें लगा कि यह एक अच्छा शब्द होगा जो चर्च के बारे में सब कुछ परिभाषित करेगा। वे एंग्लिकन या चर्च ऑफ इंग्लैंड नहीं चाहते थे। ठीक है, तो एंग्लिकन चर्च।

ठीक है, अब, जो लोग बचे हैं, उन्हें एक बिशप की ज़रूरत है। उन्हें बचे हुए एपिस्कोपल चर्च को चलाने के लिए किसी की ज़रूरत है। उन्होंने जो व्यक्ति चुना वह सैमुअल सीबरी था।

तो, सैमुअल सीबरी वास्तव में अमेरिका में एपिस्कोपल चर्च के पहले बिशप हैं। अब, उन्हें अपना अभिषेक प्राप्त करने के लिए यूरोप वापस जाने की आवश्यकता है, और वह ऐसा करते हैं। लेकिन उन्हें अभिषेक किया जाता है, उन्हें पवित्र किया जाता है, और वे यहाँ पहले एपिस्कोपल चर्च के रूप में आते हैं, इसलिए पहले एपिस्कोपल चर्च नेता के रूप में।

इसलिए अब उन्होंने फैसला किया, सैमुअल सीबरी ने फैसला किया कि उन्हें एक सम्मेलन की जरूरत है। क्रांतिकारी युद्ध के बाद, उन्हें एक सम्मेलन में एपिस्कोपेलियन को एक साथ लाने की जरूरत थी ताकि यह तय किया जा सके कि भविष्य में वे कहां जा रहे थे। इसलिए वह सम्मेलन 1785 में आयोजित किया गया।

1785 में, अमेरिका में एपिस्कोपल चर्च का पहला सम्मेलन हुआ। सैमुअल सीबरी बिशप हैं, और वे प्रभारी हैं। अब, अंदाजा लगाइए कि उन्होंने यह सम्मेलन कहां आयोजित किया।

मुझे नहीं पता कि उन्होंने अपना पहला सम्मेलन कहाँ आयोजित किया था, और आप शायद जानते होंगे। क्या कोई अनुमान लगाना चाहता है? फिलाडेल्फिया। फिलाडेल्फिया सम्मेलन के लिए चुना गया शहर लग रहा था। मेरा मतलब है, बैपटिस्ट, एसोसिएशन और प्रेस्बिटेरियन याद हैं? तो यह एंग्लिकन के साथ था, या एपिस्कोपेलियन के साथ, वे वहाँ थे।

अब, वे जानते थे कि बढ़ने और विकसित होने के लिए, उन्हें और अधिक नेतृत्व की आवश्यकता होगी। इसलिए, उन्होंने दो अन्य लोगों को चुना, और वे एपिस्कोपल चर्च के इतिहास के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। उन्होंने सैमुअल सीबरी को नेतृत्व में मदद करने के लिए दो अन्य लोगों को चुना।

उन्होंने विलियम व्हाइट नाम के एक व्यक्ति को चुना और वह पेनसिल्वेनिया का बिशप बन गया। बेशक यह कोई छोटा जिला नहीं था, लेकिन एपिस्कोपेलियन की संख्या के मामले में छोटा था, लेकिन जिले के मामले में बड़ा था, आप जानते हैं, भूमि क्षेत्र के मामले में बड़ा था। और उन्होंने सैमुअल प्रोवोस्ट नाम के एक व्यक्ति को न्यूयॉर्क का बिशप चुना।

अब, जाहिर है, यह एक डच नाम है। और मैं, आपसे ईमानदारी से कहूँ तो, मैंने कभी सैमुअल प्रोवोस्ट की पृष्ठभूमि को नहीं देखा है, लेकिन आपके कंप्यूटर पर ऐसा करना दिलचस्प होगा, लेकिन अभी नहीं। तो, लेकिन वह, आप जानते हैं, जाहिर है कि वह एक डच नाम है।

तो मुझे आश्चर्य है कि क्या उनकी पृष्ठभूमि डच रिफॉर्मेट वगैरह की थी, लेकिन वे न्यूयॉर्क के बिशप बन गए। तो, ठीक है। तो अब उन्हें क्या करना है, इन बिशपों को, उन्हें अमेरिका में एपिस्कोपल चर्च को एक साथ लाना है।

उन्हें एपिस्कोपल चर्च को गढ़ना होगा। उन्हें इसे आकार देना होगा। ठीक है।

इसलिए, अमेरिकी एपिस्कोपेलियन चर्च को आकार देने की कोशिश करते समय उनके लिए तीन चीजें महत्वपूर्ण हो जाती हैं। तीन चीजें हैं जो उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण हो जाती हैं। ठीक है।

नंबर एक, उन्होंने अमेरिकी भावना के अनुरूप बहुत कुछ कहा, लेकिन उन्होंने हमारे आम सम्मेलनों में कहा, जब हम चर्च के आम सम्मेलन में एक साथ आते हैं, तो हम न केवल पुजारियों को एक साथ लाने जा रहे हैं, बल्कि हम आम लोगों को भी इसके लिए एक साथ लाने जा रहे हैं। तो यह पहली बात थी। अमेरिका में, जब हमारे आम सम्मेलन होते हैं, तो चर्च के भविष्य के लिए निर्णय लेने के लिए पुजारी और आम लोग एक साथ आते हैं।

अब आप इस बात से हैरान नहीं होंगे। यह बहुत ही बड़ी बात है, आप जानते हैं, हमने अभी-अभी राजनीतिक स्वतंत्रता और धर्म की स्वतंत्रता प्राप्त की है। हमारे पास धार्मिक स्वतंत्रता है।

और इसलिए, आप निश्चित रूप से चाहते हैं कि यह चर्च के जीवन में भी सच हो। ठीक है। नंबर दो, और मेरे पास इसके उदाहरण नहीं हैं, लेकिन नंबर दो, अमेरिकी जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रार्थना पुस्तक को थोड़ा फिर से तैयार करना होगा।

इसलिए, अमेरिकी एपिस्कोपेलियन इंग्लैंड के राजा या इंग्लैंड की रानी के लिए प्रार्थना नहीं करने जा रहे हैं। वे ऐसा नहीं कर रहे हैं, आप जानते हैं, हम यहाँ एक अलग दुनिया और एक अलग वास्तविकता में हैं। इसलिए आपको अमेरिकी, इस नए अमेरिका की जरूरतों को पूरा करने के लिए आम प्रार्थना की किताब को बदलना होगा।

इसलिए वे अपनी पूजा के संदर्भ में इस पर काम करते हैं। तो, ठीक है। और तीसरा, उन्होंने फैसला किया कि युद्ध के बारे में एपिस्कोपेलियनों के बीच मतभेद थे।

और अभी भी कुछ एपिस्कोपेलियन थे जो ब्रिटिश विरोधी थे। कुछ एपिस्कोपेलियन थे जो क्रांतिकारी युद्ध के समर्थक थे। ठीक है।

बिशपों ने जो फैसला किया है, वह यह है कि हम अब ऐसा नहीं कर सकते। हमें बस इतना करना है कि युद्ध खत्म हो जाए। यह तय हो चुका है।

यह एक नया राष्ट्र है। चाहे आप क्रांतिकारी युद्ध से सहमत हों या असहमत, हमें यहाँ एकता के साथ आना होगा। हमें यहाँ अमेरिकी एपिस्कोपेलियन के लिए एक आम आवाज़ ढूँढनी होगी।

इसलिए, क्रांतिकारी युद्ध के बाद एपिस्कोपेलियन लोगों के बीच बहुत सी चिकित्सा की गई। इसलिए, एंग्लिकन चर्च को बहुत नुकसान उठाना पड़ा, लेकिन यह इससे बाहर आ गया। और सीबरी और व्हाइट और प्रोवोस्ट जैसे लोग ही हैं जो मदद कर रहे हैं, मुझे नहीं पता, इसे एक साथ लाने में, आप जानते हैं, और इसे पहचानने में।

क्या एंग्लिकन के बारे में कोई सवाल है? एंग्लिकन चर्च, अब प्रोटेस्टेंट एपिस्कोपल चर्च के बारे में कोई सवाल है? हाँ, पोर्टर? आपने कहा कि सीबरी को नियुक्त होने के लिए ब्रिटेन वापस जाना पड़ा। हाँ। क्या यह अभी भी एपिस्कोपल चर्च के लिए सच है? नहीं, क्योंकि अब, जब उसे नियुक्त किया गया और वह बिशप बन गया, तो वह व्हाइट और प्रोवोस्ट को नियुक्त कर सकता था।

तो, अमेरिका में, एपिस्कोपल चर्च में, एक बिशप पादरी को नियुक्त करता है। अब, बिशप कैंटरबरी के आर्कबिशप का प्रतिनिधित्व कर रहा है, लेकिन बिशप पादरी को नियुक्त करता है। तो अब जब हमारे पास बिशप हैं, तो हम ठीक हैं, वे कहेंगे।

हाँ। हाँ, निक्की? तुमने कहा कि पोप एंग्लिकन चर्च से अलग है। ठीक है।

लेकिन क्या वे भी इसी पृष्ठ पर हैं? नहीं, पोप कोई व्यक्ति नहीं है। पदानुक्रम के मामले में एंग्लिकन चर्च रोमन कैथोलिक चर्च से पूरी तरह अलग है। चर्च को कैसे चलाया जाए, इस मामले में, एक तरह से, रोमन कैथोलिक चर्च में पोप रोमन कैथोलिक चर्च को चलाते हैं।

मेरा मतलब है, जाहिर है, उसे मदद मिली है, लेकिन एंग्लिकन चर्च या एपिस्कोपल चर्च में ऐसा नहीं है। कैंटरबरी के आर्कबिशप अब अमेरिकी एपिस्कोपेलियन या अमेरिकियों को नहीं चलाते हैं। अब, हमारे यहाँ थोड़ी अलग वास्तविकता है क्योंकि आप में से कुछ लोग उससे संबंधित हो सकते हैं।

मुझे नहीं पता कि आपकी पृष्ठभूमि क्या है, लेकिन अमेरिका में, अब हमारे पास एपिस्कोपेलियन का एक समूह है, जिन्होंने एपिस्कोपेलियन चर्च छोड़ दिया है, और खुद को पहचानने के लिए, वे खुद को एंग्लिकन चर्च कह रहे हैं। तो, अभी, हमारे पास अमेरिका में फिर से एंग्लिकन चर्च हैं, लेकिन मूल रूप से, क्रांतिकारी युद्ध के कारण, नाम बदलकर एपिस्कोपल चर्च कर दिया गया था। लेकिन पिछले 10, 15, शायद 20 वर्षों के भीतर, अब हमारे पास अमेरिका में फिर से एंग्लिकन चर्च हैं।

लेकिन चाहे वह एंग्लिकन हो या एपिस्कोपल, वे कैंटरबरी के आर्कबिशप द्वारा शासित नहीं होते। कैंटरबरी के आर्कबिशप, पादरी एक तरह से मुख्य पादरी होते हैं, उनकी मदद कर सकते हैं, उन्हें कुछ खास काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं, इत्यादि, लेकिन ऐसा नहीं है, कैंटरबरी के आर्कबिशप के पास पोप की तरह कोई राजनीतिक शाखा नहीं है। हाँ।

हाँ, मैट। मुझे खेद है। हाँ।

ठीक है। चर्च ऑफ़ इंग्लैंड के नाम से नहीं, बल्कि चर्च की पहचान के आधार पर चर्च की स्थापना करने की कोशिश करना भी वैसा ही है, जो स्कॉटलैंड के लोगों के लिए अपमानजनक होगा, या फिर, जब तक कि आप खुद को चर्च ऑफ़ आयरलैंड न कहें, उदाहरण के लिए, लोग। इसलिए, इसी कारण से, मैं एंग्लिकन या इंग्लिश के साथ अपनी पहचान नहीं बनाना चाहता।

समझे मेरा क्या मतलब है? तो, वहाँ एक अलगाव है। तो हाँ, अमेरिका में, उन्होंने भी यही किया; उन्होंने भी यही किया। यहाँ कुछ और है? ठीक है।

तो यह है एंग्लिकनवाद। इसी तरह से उन्होंने चर्च पर प्रतिक्रिया व्यक्त की। अब, हमने रोमन कैथोलिक चर्च के बारे में बहुत ज़्यादा बात नहीं की है, इसलिए इस बारे में बात करना शुरू करने के लिए यह एक अच्छी जगह है।

तो, ठीक है। रोमन कैथोलिक चर्च के बारे में हम जो पहली बात कहना चाहते हैं, वह यह है कि अमेरिकी क्रांति के समय, वे बहुत, बहुत, बहुत छोटे अल्पसंख्यक थे। कुछ रोमन कैथोलिक हैं, लेकिन वे बहुत छोटे अल्पसंख्यक हैं।

हालाँकि, सार्वजनिक जीवन में उनका स्थान दो कारणों से बेहतर हुआ। तो सार्वजनिक जीवन में रोमन कैथोलिकों का स्थान, अमेरिकी जीवन के नागरिक जीवन में, दो कारणों से बेहतर हुआ। पहला, यह धार्मिक स्वतंत्रता या धार्मिक स्वतंत्रता के इस माहौल के कारण बेहतर हुआ।

इसलिए अगर हम धार्मिक होने जा रहे हैं, अगर हम वास्तव में धार्मिक स्वतंत्रता, अमेरिका में धार्मिक स्वतंत्रता में विश्वास करने जा रहे हैं, तो हमें रोमन कैथोलिकों को पनपने देना होगा। हम रोमन कैथोलिकों को दबा नहीं सकते। नंबर दो, रोमन कैथोलिक थे जिन्होंने क्रांतिकारी युद्ध में सेवा की, जिन्होंने क्रांति में लड़ाई लड़ी, और जिन्होंने इंग्लैंड को बाहर निकालने में मदद की।

और वे बहुत देशभक्त लोग थे। उन्हें बहुत देशभक्त लोगों के रूप में देखा जाता था, और इसलिए लोगों ने उन्हें इस कारण से स्वीकार किया और क्रांति से लड़ने में उनकी मदद को खुशी से स्वीकार किया। इसलिए, इन दो चीजों ने रोमन कैथोलिकों को अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण पैर जमाने का मौका दिया।

तो, यह सब यहीं से शुरू होता है। ठीक है। क्रांतिकारी युद्ध के बाद, कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो कैथोलिकों का नेतृत्व करे।

यहाँ रोमन कैथोलिकों को एक साथ लाने के लिए किसी व्यक्ति की आवश्यकता है। ठीक है। तो, जिस व्यक्ति ने ऐसा किया वह जॉन कैरोल नाम का एक व्यक्ति था।

जॉन कैरोल अमेरिका में रोमन कैथोलिक नेता बन गए, अमेरिका में पहले रोमन कैथोलिक नेता। ठीक है। अब, वह, जॉन कैरोल, एक बिशप हैं।

वह अंततः बाल्टीमोर, मैरीलैंड में बिशप बन गए। याद रखें, मैरीलैंड की स्थापना रोमन कैथोलिकों द्वारा नहीं की गई थी, लेकिन याद रखें, बहुत सारे रोमन कैथोलिक मैरीलैंड आए क्योंकि मैरीलैंड रोमन कैथोलिकों के लिए एक तरह की शरणस्थली बन गया था। इसलिए जॉन कैरोल वहाँ एक नेता बन गए।

ठीक है। जॉन कैरोल, नहीं, वह एक पादरी है, और फिर उसे बिशप के रूप में नियुक्त किया जाता है और फिर अंततः वह आर्चबिशप बन जाता है। तो वह वहाँ नेता बन जाता है।

ठीक है। अब, हम यहाँ क्या करने जा रहे हैं, यह है, मैं इसे सिर्फ मनोरंजन के लिए करना चाहता हूँ, लेकिन हम यहाँ क्या करने जा रहे हैं, हम सिर्फ अनुमान लगाने जा रहे हैं, हम एक अनुमान लगाने जा रहे हैं, और फिर मेरे पास आपको बताने के लिए एक छोटी सी कहानी है, लेकिन हम एक अनुमान लगाने जा रहे हैं। आपको क्या लगता है कि 1780 और 1790 के दशक में क्रांति के ठीक बाद, इस शुरुआती चरण में अमेरिका में सबसे महत्वपूर्ण रोमन कैथोलिक शहर कौन से थे

? सबसे महत्वपूर्ण रोमन कैथोलिक शहर कौन सा होगा जहाँ अंततः एक आर्कबिशप होगा? यह वास्तव में शो को चलाने वाला कोई है।

खैर, वह क्या होगा? वह होगा, मैं जा रहा हूँ, वह बाल्टीमोर होगा। वह बाल्टीमोर होगा। चलो शुरू करते हैं।

वह बाल्टीमोर, मैरीलैंड होगा, जहाँ एक आर्कबिशप है। ठीक है। अब तक तो सब ठीक है।

दूसरे शहरों के बारे में क्या? न्यूयॉर्क भी एक ऐसा ही शहर होगा। और अंततः न्यूयॉर्क में एक बिशप होगा। न्यूयॉर्क में बहुत सारे कैथोलिक थे, इसलिए यह महत्वपूर्ण होगा।

ठीक है। दूसरा शहर? फिलाडेल्फिया और बोस्टन। बोस्टन और फिलाडेल्फिया भी बहुत महत्वपूर्ण शहर होंगे जहाँ बिशप होंगे।

अब बोस्टन का रोमन कैथोलिक धर्म में एक बहुत ही दिलचस्प इतिहास है, जिसके बारे में हम 19वीं सदी में जाने पर जानेंगे। लेकिन एक और जगह है जो इस मामले में बहुत महत्वपूर्ण थी, आप जानते हैं, 1780 और 1790 के दशक में, रोमन कैथोलिक चर्च के प्रकार और रोमन कैथोलिक चर्च को चलाने के मामले में। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप में से कोई इस जगह, इस अंतिम जगह का अनुमान लगाने जा रहा है।

चलो देखते हैं कि क्या हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं, एरन। नहीं, लेकिन यह एक अच्छा अनुमान है। कोई और? कोई असली शहर? कोई भी? हाँ।

यह एक अच्छा अनुमान है, लेकिन नहीं, यह बिल्कुल सही नहीं है। तो, कोई और है? हम एक और अनुमान लगाएँगे। क्या किसी के पास कोई अनुमान है?

वेनहम, मैसाचुसेट्स? नहीं, वेनहम, मैसाचुसेट्स नहीं। खैर, ऐसा होता है, आप जा रहे हैं, आप जानते हैं, मेरे पास वास्तव में इस बारे में एक कहानी है जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ ताकि जब मैं बात कर रहा हूँ तो आप थोड़ा ब्रेक ले सकें। यह बार्डस्टाउन, केंटकी है।

बार्डस्टाउन, केंटकी। बहुत करीब। बार्डस्टाउन, केंटकी में एक बिशप था।

यह पश्चिम का पहला सूबा है। अब, ध्यान दें कि बिशप ग्रेट लेक्स से लेकर डीप साउथ तक रोमन कैथोलिक चर्च पर नियंत्रण रखता था। जरा इसकी कल्पना करें।

यह बहुत ज़्यादा ज़मीन है जिसे कवर करना है। और एलेघेनी पर्वत से लेकर मिसिसिपी तक। बार्डस्टाउन को राजधानी के तौर पर इसलिए चुना गया क्योंकि यह उस इलाके के बीच में था, उस इलाके के केंद्र में।

तो, केंटकी के बार्डस्टाउन में इस बेचारे बिशप को ग्रेट लेक्स से दक्षिण की ओर यात्रा करनी पड़ती है। उसे एलेघेनी पर्वत से मिसिसिपी नदी तक यात्रा करनी पड़ती है। यह लगभग आधा महाद्वीप है जो उसके अधिकार क्षेत्र में आता है।

तो यह बहुत सारी ज़मीन है। लेकिन मैं चाहता हूँ, लेकिन मैं जा रहा हूँ। असल में, मैं आपको इसके बारे में एक कहानी बताने जा रहा हूँ। तो यह है।

यहाँ बार्डस्टाउन, केंटकी के बारे में मेरी कहानी है। और जब मैं अपनी कहानी बता रहा हूँ तो आप आराम कर सकते हैं। बार्डस्टाउन में, मैं विल्मोर, केंटकी में एस्बरी थियोलॉजिकल सेमिनरी गया।

केंटकी के ठीक बीच में, लेक्सिंगटन, केंटकी के पास। और दुनिया का सबसे बड़ा ट्रैपिस्ट मठ है, जो केंटकी के बार्डस्टाउन में है। यह उस जगह से ज़्यादा दूर नहीं था जहाँ मैं सेमिनरी गया था।

यह गेथसेमेन का मठ है। और ऐसा हुआ कि मेरे चर्च के इतिहास के प्रोफेसर हमें रिट्रीट पर ले जाते थे। वह अपनी कक्षा को गेथसेमेन के मठ में रिट्रीट पर ले जाते थे।

और अगर आपने थॉमस मर्टन के बारे में सुना है तो आप गेथसेमेन के मठ को जानते होंगे। क्योंकि थॉमस मर्टन, और अगर आपने थॉमस मर्टन की कोई किताब नहीं पढ़ी है, तो गर्मियों के लिए आपकी पढ़ने की सूची में कुछ न कुछ है। द सेवन-स्टोरी माउंटेन और अन्य चीजें।

लेकिन वैसे भी, थॉमस मर्टन गेथसेमेन के मठ में एक भिक्षु थे, जो केंटकी के ठीक बीच में है, बहुत दूर नहीं। तो, मेरी छोटी सी कहानी, जबकि आप यहाँ आराम कर रहे हैं, यह है कि हम शुक्रवार की रात, शनिवार और रविवार को गेथसेमेन के मठ में एक रिट्रीट पर गए थे। अब, केवल पुरुष ही वहाँ जा सकते हैं, इसलिए कक्षा में केवल पुरुष ही प्रोफेसर के साथ जा सकते हैं।

ट्रैपिस्ट गरीबी की शपथ लेते हैं, और वे मठाधीश की आज्ञाकारिता की शपथ लेते हैं, और वे शुद्धता की भी शपथ लेते हैं। और फिर उनके पास पूर्ण मौन का एक मानक नियम है, जो हमें आकर्षक लगा। अब, मठाधीश ने स्पष्ट रूप से कुछ भिक्षुओं को हमारे साथ बात करने की अनुमति दी क्योंकि हम धर्मशास्त्र, प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र बनाम कैथोलिक धर्मशास्त्र के बारे में बात करने के लिए वहाँ थे।

तो, मठाधीश वहाँ थे, उन्होंने कुछ भिक्षुओं से कहा, मैं आपको इस समूह में नियुक्त कर रहा हूँ जैसे ही वे आते हैं और सब कुछ। लेकिन सबसे पहले भिक्षुओं ने हमें चारों ओर दिखाया, और इसलिए गरीबी, आप चलते थे, प्रत्येक भिक्षु के पास एक छोटा सा कक्ष था, और एक बिस्तर और एक कुर्सी थी, और बिस्तर के ऊपर एक छोटी सी शेल्फ थी जिस पर बस कुछ प्रकार की व्यक्तिगत चीजें थीं। शुद्धता यह है कि एक बार जब वे अपनी अंतिम प्रतिज्ञा लेते हैं, तो वे अपने जीवनकाल में फिर कभी किसी अन्य महिला को नहीं देखते हैं, इसलिए वे अपनी माँ, चाची, बहनों और बाकी सब को कभी नहीं देखते हैं।

एक बार जब वे अंतिम शपथ ले लेते हैं, गरीबी और शुद्धता, लेकिन फिर मठाधीश की आज्ञाकारिता, मठाधीश की पूर्ण आज्ञाकारिता। वे एक मौन आदेश हैं, जो बहुत दिलचस्प है। इसलिए, वे बोलते नहीं हैं; उनके पास दिन में सात पहर होते हैं जहाँ वे महान ग्रेगोरियन मंत्र गाते हैं, लेकिन वे पूर्ण मौन आदेश में बातचीत नहीं करते हैं, सिवाय उन लोगों के जिन्हें हमसे बात करने की अनुमति दी गई है।

मैं कभी नहीं भूलूंगा, कहानी छोटी है, लेकिन हम पहुंचे, यह एक शानदार निर्मित, भव्य मठ है, लेकिन मैं कभी नहीं भूलूंगा जब हम शुक्रवार की रात को पहुंचे, हम पहुंचे, और बाहर भारी बारिश हो रही थी, और अंधेरा और तूफानी और बारिश और गरजते बादल और बिजली और सब कुछ। तो हम इस खूबसूरत, भव्य मठ में पहुंचे, और भिक्षु ने हमें प्रत्येक को अपना कमरा दिखाया। हम में से प्रत्येक के पास अपना छोटा सा अलग कमरा था।

और मुझे याद है कि मैं अपने कमरे में था और मैंने कुछ सामान खोलना शुरू किया, और मेरी नज़र कमरे के दरवाज़े पर पड़ी, जो बेशक बंद था, लेकिन दरवाज़े और फर्श के बीच में शायद कुछ इंच की जगह थी। तो, मैंने देखा कि कोई मेरे कमरे के बाहर खड़ा था। और मैं सिर्फ मठ में हत्या के बारे में सोच सकता था।

क्या यह मेरा समय है? मेरे परिवार को पता भी नहीं चलेगा कि मैं यहाँ हूँ, इसलिए वे मुझे यहाँ कभी नहीं पाएँगे। तो, वाह, मैंने सोचा, ओह, यह दिलचस्प है। तो वैसे भी, हम सो गए, और फिर अगली सुबह, हम नहीं उठे; वे सुबह दो बजे उठे। हम दो बजे नहीं उठे, लेकिन हम पाँच बजे उठे।

जब तक हम उठे, तब तक वे पहले से ही बहुत सारे काम कर चुके थे, और उन्होंने पहले ही प्रार्थना कर ली थी। जब तक वे हमें जगाते, तब तक वे अपना नाश्ता और बाकी सब कुछ कर चुके थे। इसलिए, मैंने अपने साथियों से इस अनुभव के बारे में पूछना शुरू किया, और उन्होंने कहा, ओह, हमें भी यही अनुभव हुआ; हमने देखा कि कोई हमारे दरवाजे के बाहर खड़ा था। और इसलिए, हमने भिक्षु से पूछा कि यह सब क्या है। और मुझे लगता है, आतिथ्य का यह कितना प्यारा सबक है क्योंकि जब मठ में आगंतुक आते हैं, तो वे आगंतुक का नाम दरवाजे पर लिख देते हैं, और फिर पूरी रात, एक भिक्षु घर-घर जाता है और उस कमरे में मौजूद व्यक्ति के नाम से प्रार्थना करता है, और फिर पूरी रात जागरण करता है।

इसलिए, हम कभी अकेले नहीं थे, हम हमेशा उस मठ में पूरी रात प्रार्थना से घिरे रहते थे क्योंकि भिक्षु पूरी रात मेरे और हम सभी के लिए प्रार्थना करने के लिए वापस आते रहते थे। मुझे लगा कि यह एक प्यारी बात है। लेकिन फिर हमारे पास एक सप्ताहांत था, और यह एक बहुत ही आकर्षक सप्ताहांत था।

लेकिन कौन कभी अनुमान लगा सकता है कि बार्डस्टाउन, केंटकी इस समय के दौरान रोमन कैथोलिक चर्च के सबसे महत्वपूर्ण बिशपों में से एक होगा? यह एक ऐसा नाम है जो शायद आप कभी नहीं बता पाएँगे अगर हम आपसे पूछते रहें कि आपको क्या लगता है कि यह कहाँ था? फिर भी, यह मेरी बार्डस्टाउन, केंटकी कहानी और मेरी मठ की कहानी है। ठीक है, तो यह

रोमन कैथोलिक चर्च है, और रोमन कैथोलिक चर्च यहाँ स्थापित हो रहा है। ठीक है, क्या एंग्लिकनवाद, अब एपिस्कोपल चर्च, या रोमन कैथोलिक चर्च के बारे में कोई सवाल है? कोई सवाल है? ठीक है, आपकी सूची में तीसरे के लिए, मैं आपको एक ब्रेक देता हूँ। पाँच सेकंड का ब्रेक लें, और फिर हम अमेरिकी मेथोडिज़्म पर तीसरा भाग करेंगे और पता लगाएँगे कि अमेरिकी मेथोडिज़्म में क्या हो रहा है।

ठीक है, जब हम अमेरिकी मेथोडिज़्म के बारे में बात करते हैं, तो हमें एक तरह से शुरुआत करनी चाहिए, मैं यह नहीं कहना चाहता कि मेथोडिज़्म के संस्थापक कौन थे क्योंकि वे नहीं थे, लेकिन हमें जॉन वेस्ले से शुरुआत करनी चाहिए। तो यहाँ जॉन वेस्ले हैं, और अगर आपको नहीं पता तो नीचे वेस्ले की एक तस्वीर है, लेकिन वे वहाँ हैं, 1703 से 1791 तक। तो, लंबी कहानी को संक्षेप में कहें तो, मैं आपको वेस्ले की किसी भी तरह की जीवनी नहीं देने जा रहा हूँ क्योंकि वे केवल एक बार अमेरिका आए थे।

हम अमेरिका में जो हुआ उस पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं, लेकिन संक्षेप में, जॉन वेस्ले ऑक्सफोर्ड से एक एंग्लिकन पादरी थे। उन्होंने अमेरिका और जॉर्जिया की एक मिशनरी यात्रा की थी, लेकिन वे वहाँ ज्यादा समय तक नहीं रहे। इसलिए, उनका पूरा मंत्रालय, आजीवन मंत्रालय, वास्तव में इंग्लैंड में था, वापस इंग्लैंड, आयरलैंड, वेल्स, स्कॉटलैंड, ऐसी जगहों पर।

संक्षेप में कहें तो जॉन वेस्ले ने पाया कि वह एक एंग्लिकन पादरी है, इसलिए उसे नियुक्त किया गया है। उसे एंग्लिकन मंत्रालय में नियुक्त किया गया है। जब वह पादरी बना तो एंग्लिकन चर्च में उसे जो पता चला वह उसके लिए बहुत भयावह था।

उन्होंने पाया कि एंग्लिकन, एक बार बपतिस्मा लेने के बाद या चर्च में आने के बाद, उन्होंने पाया कि 30 साल बाद, 40 साल बाद, 50 साल बाद, ये लोग बाइबल के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे, यीशु के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे, धर्म के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे, उस दिन से जब वे धर्मांतरित हुए या पुष्टि की या एंग्लिकन चर्च में आए। वह वास्तव में इस बात से हैरान थे, कि उन्हें ऐसा लगा कि धर्म, ईसाई धर्म, ईश्वर की कृपा में वृद्धि होना चाहिए। यह ईश्वर की कृपा में बढ़ने का एक अद्भुत प्रकार का अभ्यास होना चाहिए, और मैथ्यू 22 उनके पसंदीदा ग्रंथों में से एक बन गया।

आपको परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए और अपने पड़ोसी से प्रेम करना चाहिए। और वह अभिव्यक्ति, परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसी से प्रेम करने की वह बहुत ही समृद्ध अभिव्यक्ति आपको पवित्रता में आपकी जबरदस्त वृद्धि में मदद करनी चाहिए। और इसलिए, वेस्ली ने इस संदेश का प्रचार करना शुरू किया।

उन्होंने संदेश का प्रचार करना शुरू किया और फिर 53 साल तक इंग्लैंड में वेस्लेयन पुनरुद्धार चला। तो, यह हमारे पहले महान जागरण के साथ ही चल रहा था। वहाँ कुछ समानताएँ थीं।

और जिस चीज़ ने इस पुनरुत्थान में बहुत मदद की, वह उनके भाई चार्ल्स वेस्ले के भजन थे। चार्ल्स वेस्ले ने अपने जीवनकाल में 6,000 भजन लिखे। ऐसे कई साल थे जब वे अपने जीवन के हर दिन एक भजन लिखते थे।

और आप जानते होंगे कि कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने एक तरह से आंदोलन को बनाए रखने में मदद की। ईश्वरीय प्रेम सभी प्रेमों से श्रेष्ठ है, या क्या यह हो सकता है कि मुझे उद्धारकर्ता के प्रेम में रुचि प्राप्त करनी चाहिए और इसी तरह? तो, सुनो हेराल्ड स्वर्गदूत गाते हैं।

तो, हम गाने नहीं जा रहे हैं, लेकिन यह ठीक है। लेकिन इसलिए पुनरुद्धार बहुत सफल रहा। अब, मेथोडिज्म एंग्लिकन चर्च में सुधार लाने के लिए एक आंदोलन था।

तो, मेथोडिज्म कोई अलग संप्रदाय नहीं था। यह एंग्लिकन चर्च को सुधारने और एंग्लिकन चर्च में नई जान डालने का एक आंदोलन था। इस तरह से, आप कह सकते हैं कि जॉन वेस्ले मेथोडिज्म के संस्थापक थे।

इस अर्थ में वे मेथोडिज्म के संस्थापक थे। लेकिन वे किसी नए संप्रदाय के संस्थापक नहीं थे। यह बात बाद में आएगी।

अब, मेथोडिज्म शब्द तब आया जब जॉन चार्ल्स वेस्ले और जॉर्ज व्हिटफील्ड को याद आया कि व्हिटफील्ड भी ऑक्सफोर्ड से थे। लेकिन जब वे ऑक्सफोर्ड में थे, तो यह शब्द इसलिए आया क्योंकि वे वहां के छात्र थे, और वे न केवल अध्ययन करने के लिए एक साथ आते थे, हालाँकि यही मूल कारण था कि वे एक साथ क्यों आते थे। वे पहले अध्ययन करने के लिए एक साथ आते थे, लेकिन फिर यह ऑक्सफोर्ड में शास्त्रों और प्रार्थना और गरीब लोगों की सेवा करने के अध्ययन में विकसित हुआ।

यह उसी रूप में विकसित हुआ। और इसलिए इसे अन्य छात्रों द्वारा उपहास का नाम दिया गया। अन्य छात्र इन लोगों को मेथोडिस्ट कहते थे।

वे व्यवस्थित तरीके से जी रहे हैं। वे व्यवस्थित तरीके से प्रार्थना कर रहे हैं। वे व्यवस्थित तरीके से बाइबल का अध्ययन कर रहे हैं।

तो वे मेथोडिस्ट हैं। तो उन्होंने इसे सम्मान का बिल्ला माना। और उन्होंने कहा, हाँ, हम मेथोडिस्ट हैं।

और इसलिए उन्होंने अपने नवीनीकरण आंदोलनों के लिए यही शब्द अपनाया। केकर शब्द याद रखें। केकर शब्द मूल रूप से एक उपहासात्मक शब्द था, जिसके बारे में उन्होंने कहा, ठीक है, हम अपने लिए और साथ ही अन्य शब्दों के लिए भी केकर शब्द ही लेंगे।

तो इस तरह मेथोडिज्म की शुरुआत हुई। अब, क्रांतिकारी युद्ध शुरू होने से पहले, जॉन वेस्ले ने क्रांतिकारी युद्ध की शुरुआत से पहले आठ मेथोडिस्ट मिशनरियों को कॉलोनिनों में भेजा। तो, उनमें से आठ कॉलोनिनों में आए, और उन्हें एंग्लिकन चर्चों में नवीनीकरण लाना था।

लेकिन अगर ऐसा हुआ कि उन्हें दूसरे लोगों को उपदेश देने और लोगों को यीशु के लिए जीतने का मौका मिला, तो वे भी यही करेंगे। वे बड़े पैमाने पर घुमंतू लोग थे जो जॉन वेस्ले की तरह यहाँ आए थे। अब, आप उन सभी आठ लोगों का नाम नहीं जानते जो यहाँ आए थे, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति का नाम, यहाँ आने वाले सबसे महत्वपूर्ण मिशनरी का नाम फ्रांसिस एस्बरी था।

तो, यहाँ फ्रांसिस एस्बरी का नाम है। और अगर आप में से कोई एस्बरी कॉलेज या मेरे अल्मा मेटर, एस्बरी थियोलॉजिकल सेमिनरी के बारे में कुछ जानता है, जिसका नाम फ्रांसिस एस्बरी के नाम पर रखा गया है। तो युद्ध से पहले यहाँ आने वाले सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति वे क्यों हैं? फ्रांसिस एस्बरी के साथ यहाँ क्या हो रहा है? वे सबसे महत्वपूर्ण इसलिए हैं क्योंकि वे अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जो यहाँ रुके थे।

बाकी सभी सात मिशनरी घर लौट गए क्योंकि वे यहाँ चल रही क्रांति से असहमत थे, जैसा कि जॉन वेस्ले ने भी किया था। जॉन वेस्ले ने सोचा कि यह भयावह है कि हम बलपूर्वक इंग्लैंड को उखाड़ फेंकने की कोशिश कर रहे थे। उन्हें यह बहुत भयावह लगा।

तो, एक व्यक्ति रह गया, और वह व्यक्ति है फ्रांसिस एस्बरी। तो फ्रांसिस एस्बरी अपनी मेथोडिस्ट जड़ों के प्रति सच्चे हैं, और क्रांतिकारी युद्ध के बाद, वह अभी भी उन एंग्लिकन की मदद करने की कोशिश करते हैं जो बचे रह गए थे। बेशक, बहुत से लोग नहीं थे, लेकिन फिर भी उन्होंने खुद को सभी को सुसमाचार का प्रचार करते हुए पाया।

तो, फ्रांसिस एस्बरी वास्तव में अमेरिका में मेथोडिज्म के घुमंतू मंत्री बन गए, ठीक वैसे ही जैसे जॉन वेस्ले इंग्लैंड में घुमंतू मंत्री बन गए थे। ठीक है। अब, इंग्लैंड में मेथोडिस्ट पुनरुद्धार के दौरान एक बात हुई, और आप मुझे बताइए कि ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए।

इंग्लैंड में मेथोडिस्ट पुनरुत्थान में एक बात यह हुई कि जॉन वेस्ले ने अपने मेथोडिस्ट आंदोलन में आम प्रचारकों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। ठीक है। आम प्रचारकों का इस्तेमाल करना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन जॉन वेस्ले ने इंग्लैंड में मेथोडिस्टों की सेवा करने के लिए पुजारियों को नियुक्त करना शुरू कर दिया, जो एंग्लिकन चर्च में पुनरुत्थान लाने की कोशिश कर रहे थे, उन्होंने पुजारियों को नियुक्त करना शुरू कर दिया।

ठीक है। अब, उस तस्वीर में क्या गलत है? कौन है, उस तस्वीर में क्या गलत है? जॉन वेस्ले खुद एक पादरी हैं। वह एक पादरी हैं।

वह एक पादरी है। इस तस्वीर में क्या गलत है? सही है। वह एक तरह से बिशप का काम अपने ऊपर लेता है, क्योंकि केवल बिशप ही पादरी को मंत्रालय के लिए नियुक्त कर सकता है।

जॉन वेस्ले ने इसका खंडन करते हुए कहा कि, जब मैंने अपनी बाइबल खोली, तो मुझे बिशप और प्रेस्बिटर में कोई अंतर नहीं दिखा। बिशप एक पादरी होता है। पादरी एक बिशप होता है।

उन्हें कोई अंतर नज़र नहीं आया, इसलिए उन्होंने सोचा कि ऐसा करना सही था, इसलिए उन्हें ऐसा करने में कोई समस्या नहीं थी। यह विवाद का विषय बन जाता है, हालाँकि उन्होंने वास्तव में उन्हें एंग्लिकन से, इंग्लैंड के चर्च से कभी बाहर नहीं निकाला। उन्होंने वास्तव में ऐसा कभी नहीं किया।

वह एक एंग्लिकन पादरी के रूप में मरा, इसलिए उसे कभी बाहर नहीं निकाला गया। ठीक है। अब, जॉन वेस्ले जानता है कि उसे इन अमेरिकी मेथोडिस्टों के साथ क्या करना है; हालाँकि, उसे देना होगा; उसे वहाँ किसी ऐसे व्यक्ति को रखना होगा जो नियुक्त भी हो।

उसे वहाँ किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जिसे मेथोडिस्ट लोग सुसमाचार के नियुक्त नेता के रूप में देखें। फ्रांसिस एस्बरी एक आम आदमी था, इसलिए जॉन वेस्ले ने इंग्लैंड से एक बहुत ही महत्वपूर्ण मेथोडिस्ट, थॉमस कोक को भेजा। अब, थॉमस कोक पहले से ही नियुक्त थे।

वह इंग्लैंड में एंग्लिकन चर्च में पादरी है, और थॉमस कोक को फ्रांसिस आस्बरी को ईसाई मंत्रालय में नियुक्त करने के स्पष्ट उद्देश्य से अमेरिका भेजा गया है। तो यह उसका काम है। अब, याद रखें, थॉमस कोक भी बिशप नहीं है, लेकिन वेस्ली एंग्लिकन चर्च के साथ इस तरह की बहुत विवादास्पद बहस कर रहा है कि किसे नियुक्त करने का अधिकार है, कौन बिशप है, और इसी तरह की अन्य बातें।

तो थॉमस कोक वेस्ले के कहने पर आए, और संक्षेप में, उन्होंने 24 दिसंबर, 1784 को फ्रांसिस एस्बरी को मंत्रालय में नियुक्त किया। इसे क्रिसमस सम्मेलन कहा जाता है क्योंकि यह क्रिसमस की पूर्व संध्या थी जब फ्रांसिस एस्बरी को नियुक्त किया गया था। क्रिसमस सम्मेलन बाल्टीमोर, मैरीलैंड में आयोजित किया गया था क्योंकि बाल्टीमोर उपनिवेशों में मेथोडिस्ट आंदोलन का मुख्यालय बन गया था। ठीक है, तो अब, यदि आप कभी एस्बरी कॉलेज या एस्बरी थियोलॉजिकल सेमिनरी के परिसर में हैं, तो यह एक तस्वीर है। यह बहुत अच्छा नहीं रहा, लेकिन मुझे यह Google से मिला। यह उस क्रिसमस सम्मेलन की एक तस्वीर है, और यह थॉमस कोक की सफेद एंग्लिकन लबादे में और हाथ रखते हुए, साथ ही अन्य मंत्रियों की 1784 में बाल्टीमोर, मैरीलैंड में फ्रांसिस एस्बरी पर हाथ रखते हुए एक तस्वीर है।

तो, यह अमेरिका में आधिकारिक तौर पर मेथोडिज्म की शुरुआत थी। ठीक है, अब, लंबी कहानी संक्षेप में, मेथोडिज्म एंग्लिकनवाद, चर्च ऑफ इंग्लैंड या एपिस्कोपल चर्च से अलग नहीं होगा। यह जॉन वेस्ली की मृत्यु के बाद ही अलग होगा।

जब जॉन वेस्ले की मृत्यु 1791 में हुई, तब आपको बहुत सारे मेथोडिस्ट संप्रदाय मिलने लगे। आप में से कुछ लोग यहाँ मेथोडिस्ट हो सकते हैं, लेकिन जब जॉन वेस्ले की मृत्यु 1791 में हुई, तो आपको मेथोडिस्ट संप्रदाय मिलने लगे, और आपको अमेरिका में भी मेथोडिस्ट संप्रदाय मिलने लगे। अब, उस लंबी कहानी का एक हिस्सा अमेरिका में कोक और बिशप है कोक और बिशप; अमेरिकी भावना की स्वतंत्रता के कारण, जॉन वेस्ले को ऐसा लगा जैसे वे यहाँ एक चर्च शुरू कर रहे हैं।

फ्रांसिस एस्बरी के नियुक्त होने के बाद वे थोड़े घबरा गए थे। जॉन वेस्ली इन लोगों की हरकतों से थोड़े घबरा गए थे, और देखिए, जॉन वेस्ली को दिल का दौरा पड़ने जैसा कुछ महसूस हुआ, उन्होंने खुद को बिशप कहना भी शुरू कर दिया। कोक और एस्बरी ने खुद को बिशप कहना शुरू कर दिया।

अगर आप खुद को बिशप कहते हैं, तो ऐसा लगता है कि आपके हाथों में एक अलग चर्च है। मुझे नहीं पता कि अमेरिका में क्या हो रहा है। इसलिए, उन्होंने उन्हें घर बुलाया, उन्हें घर आने के लिए कहा, और निश्चित रूप से, उन्होंने कहा, नहीं धन्यवाद, हम यहीं रहेंगे, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

तो, मेथोडिज्म, लेकिन तकनीकी रूप से, मेथोडिस्ट संप्रदाय 1791 के बाद ही शुरू होते हैं। तो इस तरह से मेथोडिज्म क्रांतिकारी युद्ध की अवधि में फ्रांसिस एस्बरी, थॉमस कोक और अन्य लोगों के साथ आगे बढ़ा। लेकिन अब, जब आप मेथोडिज्म को आगे बढ़ाते हैं, तो मेथोडिज्म अभी भी उपनिवेशों में बहुत छोटा है, लेकिन अगली सदी में मेथोडिज्म मजबूती से बढ़ेगा।

तो यह है मेथोडिज्म की कहानी। तो यह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। ठीक है, तो अब हमारे पास तीन हैं।

हमारे पास एंग्लिकन चर्च, रोमन कैथोलिक चर्च और अमेरिकन मेथोडिज्म है। तो, क्या आपके पास इन तीन संप्रदायों के बारे में कोई सवाल है, उनका प्रदर्शन कैसा रहा, उन्होंने इसे कैसे पार किया, उन्होंने क्रांतिकारी युद्ध के दौर से खुद को कैसे निकाला और कैसे काम किया? ठीक है, बुधवार, किताबें, नोट्स, लेकिन मुख्य रूप से, मेरा मतलब है, शुक्रवार, किताबें, नोट्स। हम मुख्य रूप से अपनी किताबों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, अपनी किताबों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, और हम साथ मिलकर कुछ सीखेंगे।

शुक्रवार को कोई व्याख्यान नहीं होगा। यह सब सिर्फ ज्ञानवर्धक होगा। आपका दिन शुभ हो। शुक्रवार को आपसे मिलूंगा।